Godda College, Godda

Name of the Teacher	Course	Sem	Subject	Title	Mode
Dr. Pankaj Kumar	B.Ed	II	TC-201	शिक्षण अधिगम की मूल प्रक्रियाएँ	Pdf

P. Kumar
13/04/2020

Scanned with CamScanner

शिक्षण अधिगम की मूल प्रक्रियाएँ :–

- शिक्षण का शाब्दिक अर्थ है सीखने में सहायता करना तथा शिक्षा से शिक्षण से घनिष्ट संबंध होता है।
- शिक्षण को एक सामाजिक प्रक्रिया के रुप में देखा जा सकता है। समाज के साथ–साथ शिक्षा का स्वरुप भी बदल जाता है। अतैव शिक्षण को एक परिभाषा के रुप मे बांधा नहीं जा सकता है।
- शिक्षण विधुवी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षण के स्रोत द्वारा छात्र और उसके व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने के लिए सभी आवश्यक क्रियाओं को आयोजित इस प्रकार से करने पर ध्यान दिया जाता है कि छात्र के व्यवहार मे वांछित परिवर्तन हो तो उसे शिक्षण हुआ ऐसा माना जाता है।
- मोरीसन के अनुसार "शिक्षा एक अधिक परिपक्व और कम परिपक्व व्यक्तित्व के मध्य घनिष्ठ संपर्क है, जिसके द्वारा कम परिपक्व व्यक्तित्व को शिक्षा की दिशा में और आगे बढ़ाया जा सकता है।
- स्मिथ के शब्दों में "शिक्षण उद्देश्य केन्द्रित होता है।"
- थाइन के अनुसार "अधिगम में वृद्धि करना ही शिक्षण है।"
- बर्टन के अनुसार "शिक्षण अधिगम हेतु प्रेरणा, पथ प्रदर्शन व प्रोत्साहन है।"
- शिक्षण के तीन चर है – 1. आश्रित चर (छात्र), 2. स्वतंत्र चर (शिक्षक) 3. मध्यस्थ चर (पाठ्यक्रम)
- डैकन तथा हफ के अनुसार "शिक्षण चार चरणों वाली एक प्रक्रिया है जिसमें चेतना, निर्देशन, मापन एवं मूल्यांकन आते है।

शिक्षण की प्रकृति एवं विशेषताएँ :–

- शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक विकास की प्रक्रिया है।
- शिक्षण कला और विज्ञान दोनों है।
- शिक्षण एक भाषायी प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक अन्तःक्रिया है।
- शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।
- शिक्षण आमने–सामने होनेवाली प्रक्रिया है।
- शिक्षण विधुवी प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक निर्देशन की प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक उपचारात्मक विधि है।
- शिक्षण औपचारिक एवं अनौपचारिक क्रिया है।
- शिक्षण कौशलात्मक निर्पूणता की प्रक्रिया है।
- उच्च कोटि की शिक्षण की विशेषताएँ
- क्रियाशील, प्रगतिशील, लोकतांत्रिक, सहानुभूतिपूर्ण, सहयोगात्मक, वांछनीय सूचना आधारित, समायोजनात्मक, निदानात्मक, उपचारात्मक, सीखने के नियमों, सिद्धांतों, विधियों और सुत्रों पर आधारित होते है।

शिक्षण के सिद्धांत :– शिक्षण के सिद्धांतों को मुख्य रुप से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है – 1. शिक्षण के सामान्य सिद्धांत, 2. शिक्षण के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत।

शिक्षण के सामान्य सिद्धांत :–

- पूर्व अनुभवों को जोड़ने का सिद्धांत :– छात्रों के पूर्व अनुभवों को नये पाठ्य वस्तु से जोड़ना।
- निश्चित उद्देश्य का सिद्धांत :– शिक्षक द्वारा छात्रों को पढ़ाये जानेवाले पाठ का उद्देश्य निश्चित होता है।

Scanned with CamScanner

- लचीलेपन का सिद्धांत :– शिक्षण विधियों में समय, स्थान, विषयवस्तु के अनुसार आवश्यकतानुसार परिवर्तन लाना।
- बाल केन्द्रिता का सिद्धांत :– शिक्षण का आधार बालक को मानना।
- व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धांत :– शिक्षण में बालकों के सभी वर्ग को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करना।
- वास्तविक जीवन से जोड़ने का सिद्धांत :– पाठ्यवस्तु को दैनिक जीवन से जोड़कर रुचिपूर्ण बनाना।
- अन्य विषयों के साथ समन्वय का सिद्धांत :– शिक्षण के दौरान एक विषय को दूसरे विषय से जोड़कर पढ़ना।
- प्रभावशाली व्यूह रचना सिद्धांत :– प्रभावशाली शिक्षण के लिए पाठ्य सहायक सामग्री का चुनाव विषयवस्तु के अनुसार करना।
- सक्रिय सहयोग और क्रियाशीलन का सिद्धांत :– पाठ्य के विकास के लिए छात्रों का सहयोग एवं क्रियाशील बनाने में आवश्यक सहयोग करना।

शिक्षण के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत :–

- अभिप्रेरणा एवं रुचि का सिद्धांत :– छात्रों को शिक्षण हेतु तैयार करना, अभिप्रेरित करना और रुचि जागृत करना।
- आवृति एवं अभ्यास का सिद्धांत :– इसमें विषयवस्तु का अभ्यास बार–बार कराया जाता है।
- परिवर्तन, आशय और मनोरंजन का सिद्धांत :– शिक्षण के समय छात्रों को बीच–बीच में आराम के अवसर उपलब्ध करना, विषय वस्तु में परिवर्तन लाना एवं मनोरंजन का अवसर उपलब्ध करना।
- प्रतिपुष्टि और पुनर्बलन का सिद्धांत :– छात्रों द्वारा किये गये कार्यों की तारीफ करना, शाबासी देना आदि जैसे कार्य उसकी कार्यक्षमता को बढ़ाने में सहायक होते है। उन्हें फिर से कार्य करने के लिए दोगुनी उर्जा प्राप्त होती है।
- स्वअधिगम को प्रोत्साहन देने का सिद्धांत :– स्वअधिगम में छात्र अपने कार्यों को स्वयं करके सीखते है।
- सहयोग एवं साहानुभूति का सिद्धांत :– छात्रों द्वारा किये जा रहे कठिन कार्यों में सहयोग करके एवं उसके प्रति साहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करके शिक्षण को नई दिशा प्रदान की जा सकती है।
- सृजनात्मकता का पोषण सिद्धांत :– बालकों में सृजनशीलता के गुणों को आगे बढ़ाने के लिए अवसर उपलब्ध करना एवं सृजनात्मकता का संरक्षण करना।
- ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्रशिक्षण का सिद्धांत :– शिक्षण में ज्ञानेन्द्रियों द्वारा सीखा गया विषय वस्तु ज्यादा दिनों तक एवं स्मरण एवं अधिक महत्वपूर्ण होता है। अतैव अधिगम के समय इसका अधिक प्रयास करना चाहिए।

शिक्षण के सुत्र :– शिक्षण का कार्य करते समय शिक्षक को कुछ महत्वपूर्ण शिक्षण के सुत्रों को ध्यान में रखकर किया गया शिक्षण कार्य छात्रों के अधिगम स्तर को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो इस प्रकार है :–

- ज्ञात से अज्ञात की ओर :– छात्रों को पहले वैसे पाठ की जानकारी देनी चाहिए जिसके बारे में वह जानता है फिर वही से अज्ञात पाठ की ओर बढ़ना चाहिए।
- सरल से जटिल की ओर :– छात्रों को सरल एवं आसान बातों का ज्ञान देते हुए जटिल/कठिन शब्दों की ज्ञान की ओर बढ़ना चाहिए।
- स्थूल से सुक्ष्म की ओर :– सर्वप्रथम छात्रों को ऐसे विषय वस्तु का ज्ञान देने चाहिए जिसे वह छुकर एवं देखकर सीख सके उसके बाद सैद्धांतिक या मानसिक स्तर वाले बातों की जानकारी दी जानी चाहिए।
- प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर :– छात्रों के सामने जो विषय वस्तु है उसे बताते हुए जो वस्तु सामने नही है यानि अप्रत्यक्ष है का ज्ञान करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

- पूर्ण से अंश की ओर :– छात्रों को पहले पूरे भाग की जानकारी देना फिर उसके हिस्से यानि अंश की जानकारी देना चाहिए जिससे उसका अधिगम स्तर बढ़ सके। जैसे किसी पौधे की जानकारी देने के बाद ही उसके फूल की जानकारी देना।
- विशिष्ट से सामान्य की ओर :– छात्रों को पहले उदाहरण द्वारा वस्तु विशेष की जानकारी देना पुनः उसका सामान्यीकरण करना चाहिए।
- अनिश्चित से निश्चित की ओर :– बालक को शिक्षा प्रदान करते समय पहले अनिश्चित का ज्ञान जैसे– थोड़ा–ज्यादा, देना चाहिए फिर उसकी निश्चित ज्ञान को अवगत करना चाहिए जैसे–निश्चित मान को।
- विश्लेषण से संश्लेषण की ओर :– पाठ को किसी विषय वस्तु को बताते समय विषय वस्तु के बारे में व्यापक जानकारी देना फिर उसका सारांश या मुख्य बातें की जानकारी देना या निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।
- अनुभव से तर्क की ओर :– छात्रों को पहले अपने अनुभवों से अवगत ज्ञान एवं अवलोकन या निरीक्षण द्वारा अर्जित ज्ञान का बोध कराते हुए प्राप्त ज्ञान से तर्कपूर्ण बनाना।
- मनोविज्ञान से तर्क की ओर :– पहले छात्रों की रुचि, पसंद, मानसिक स्तर तथा प्रेरणा को आधार मान अवलोकन करें फिर तर्क की कसौटी पर रखते हुए शिक्षण करना चाहिए क्योंकि सभी की अधिगम स्तर भिन्न–भिन्न होते है।
- प्रकृति का अनुसरण :– बालकों की प्रारंभिक शिक्षा उनकी प्रकृति, रुचि, आवश्यकताओं, शारीरिक एवं मानसिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए।
- स्वाध्याय का अनुसरण :– छात्रों में स्वाध्याय की भावना का विकास करना चाहिए। स्वाध्याय द्वारा अर्जित ज्ञान छात्रों की दृष्टिपटल पर अमिट छाप छोड़ती है। अर्थात छात्रों की जमापूँजी है। डाल्टन की पद्धति भी इसका समर्थक है।

प्रमुख शिक्षण विधियाँ

आगमन विधि ;प्दकनबजपअम उमजीवक द्ध (अरस्तु) :–

- आगमन विधि में अनुभवों, प्रयोगों तथा उदाहरणों का विस्तृत अध्ययन करके नियम बनाये जाते है। इस विधि द्वारा शिक्षण करते समय शिक्षक बालकों के समक्ष कुछ विशेष परिस्थितियों एवं उदाहरण प्रस्तुत करता है। इन उदाहरणों के आधार पर बालक तार्किक ढंग से विचार विमर्श करते हुए किसी विशेष सिद्धांत, नियम अथवा सूत्र पर पहुँचते है।
- नियमों, सूत्रों आदि का प्रतिपादन करते समय बालक अपने अनुभवों, मानसिक शक्तियों तथा पूर्व ज्ञान का प्रयोग करता है।
- यह एक सामान्य अनुमान है कि कोई बालक कुछ विशेष परिस्थितियों या उदाहरणों को देखकर या अनुभव करके उनमें पाई जाने वाली एकरूपता को निष्कर्ष के रूप में अपना लेता है। इसलिए इस विधि को सामान्यानुमान विधि ;प्दकनबजपअम उमजीवकद्ध कहा जाता है।
- यंग ;ल्वनदहद्ध के अनुसार "आगमन विधि में बालक विभिन्न स्थूल तथ्यों ;ब्वदबतमजम थ्िंबजेद्ध के आधार पर अपनी मानसिक शक्ति का प्रयोग करते हुए स्वयं किसी विशेष सिद्धांत, नियम अथवा सूत्र पर पहुँचते है।
- आगमन विधि द्वारा शिक्षण करते समय उदाहरणों से नियमों की ओर विशेष से सामान्य की ओर एवं स्थूल से सूक्ष्म की ओर अग्रसर होते है।

आगमन विधि के गुण एवं विशेषताएँ :–

- यह एक वैज्ञानिक विधि है क्योंकि इस विधि द्वारा अर्जित ज्ञान प्रत्यक्षों, तथ्यों पर आधारित होता है।
- इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान अधिक स्थाई होता है। इससे बालकों की आलोचनात्मक, निरीक्षण एवं तर्क शक्ति का विकास होता है।
- यह छोटी कक्षाओं के लिए अति उपयोगी एवं उपयुक्त विधि है।
- यह विधि मनोवैज्ञानिक है क्योंकि इसमें मनोविज्ञान के विभिन्न महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का अनुकरण किया जाता है।

Scanned with CamScanner